



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

## કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ડામ્ત બ્રકાતુહુમ્માલિહે  
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે  
اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ! હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઓર બુજુર્ગી વાલે. (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)  
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના  
વ બકીઅ  
વ મગિફરત  
13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



## મસ્જિદે ખુશબૂદાર રખિયે

યેહ રિસાલા (મસ્જિદે ખુશબૂદાર રખિયે)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ ડામ્ત બ્રકાતુહુમ્માલિહે ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મક્તૂબ, ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાખિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,  
ત્રીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعُدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



મસ્જિદે ખુશબૂદાર રખિયે



શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ મગર યેહ રિસાલા (23 સફહાત)  
પૂરા પઠ કર અપની આબિરત કા ભલા કીજિયે.

## દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત

અલ્લાહ ઈબ્રાહીમ કે મહબૂબ, દાનાએ ગુયૂબ, મુનઝઝહુન અનિલ

ઉયૂબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને આલીશાન હૈ : જિસ ને મુઝ પર દિન ભર મેં એક હઝાર મર્તબા દુરુદે પાક પઠા વોહ ઉસ વક્ત તક નહીં મરેગા જબ તક જન્મત મેં અપની જગહ ન દેખ લે. (الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## મસ્જિદ મેં બલગમ દેખ કર સરકાર કી ના ગવારી

એક મર્તબા હુઝૂરે અકરમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ, રસૂલે મુહુતશમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને મસ્જિદુન્ન-બવિયિયશરીફ મેં કિબલે કી તરફ બલગમ પડી દેખી તો ના રાઝગી કા ઈઝહાર ફરમાયા. યેહ દેખ કર એક અન્સારી સહાબિયા ઉઠીં ઓર ઉસે ખુરચ કર સાફ કર કે વહાં ખુશબૂ લગા દી. આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને મસરત આમેઝ લહજે મેં ઈશાદિ ફરમાયા : **يَا مَآ أَحْسَنَ هَذَا** ઈસ ખાતૂન ને કિતના હી ઉમ્દા કામ કિયા હૈ. (نسائي ص ١٢٦ حديث ٧٢٥)

﴿ ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴾ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरेदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)﴾

## ફારૂકે આ'ઝમ ઓર મસ્જિદ મેં પુશબૂ

સચ્ચિદુના ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ હર જુમુઅતુલ મુબારક કો મસ્જિદુન્ન-બવિય્ચિશરીફ صَلَوَاتُهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ મેં પુશબૂ કી ધૂની દિયા કરતે થે. (مُسْنَدُ أَبِي يَعْقُبَ ج ١ ص ١٠٣ احديث ١٨٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## મસ્જિદેં પુશબૂદાર રખિયે !

ઉમ્મુલ મુઅમિનીન હઝરતે સચ્ચિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા رِيوَايَت ફરમાતી હેં : હુઝૂરે પુરનૂર, શાફેએ યૌમુન્નુશૂર ને મહલ્લોં મેં મસ્જિદેં બનાને કા હુકમ દિયા ઓર યેહ કે વોહ સાફ ઓર પુશબૂદાર રખી જાએ.

(ابوداؤد ج ١ ص ١٩٧ احديث ٤٥٥)

## એયર ફેશનર સે કેન્સર હો સકતા હે

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! મા'લૂમ હુવા મસ્જિદેં ઊદ, લૂબાન ઓર અગરબત્તી વગૈરા સે પુશબૂદાર રખના કારે સવાબ હે. મગર મસ્જિદ મેં એસી દિયા સલાઈ (યા'ની માચિસ કી તીલી) ન જલાઈયે જિસ સે બારૂદ કી બદબૂ નિકલતી હૈ ક્યૂંકે મસ્જિદ કો બદબૂ સે બચાના વાજિબ હૈ. બારૂદ કા બદબૂદાર ધુવાં અન્દર ન આને પાએ ઈતની દૂર બાહર સે લૂબાન યા અગરબત્તી વગૈરા સુલગા કર મસ્જિદ મેં લાઈયે. અગરબત્તિયોં કો કિસી બડે તશત વગૈરા મેં રખના ઝરૂરી હૈ તા કે ઈસ કી રાખ મસ્જિદ કે ફર્શ વગૈરા પર ન ગિરે. અગરબત્તી કે

ईरमाने मुस्तकी: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: श्री शिप्स मुज पर दुरेद पाक पढना भूल गया वोह जन्त की रास्ता भूल गया. (جران)

पेकिट पर अगर जानदार की तस्वीर बनी हुई हो तो उस को पुरय डालिये. मस्जिद (नीज घरों और कारों वगैरा) में “अेयर फ़ेशनर” (AIR FRESHNER) से पुरुषू का छिडकाव मत कीजिये के उस के कीमियावी मादे इजा में डैल जाते और सांस के जरीअे डेडों में पडोंय कर नुकसान पडोंयाते हैं. अेक तिब्बी तलकीक के मुताबिक अेयर फ़ेशनर के इस्ति’माल से जिल्द का सरतान या’नी (SKIN CANCER) हो सकता है. जहां उई हो वहां मस्जिद के यन्दे से पुरुषू सुलगाने की इजाजत है और जहां उई न हो वहां पुरुषू की सराहत कर के अलग से यन्दा डालिये करें.

**मुंड में बढभू हो तो मस्जिद में जाना हराम है**

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! भूक से कम खाने की आदत बनाईये या’नी अन्बी ज्वालिश बाकी हो, के डाय रोक लीजिये. अगर भूख उट कर खाते रहे और वक्त बे वक्त सीप कबाब, बर्गर, आलू छोले, पिज़्जे, आइसकीम, ठन्डी बोतलें वगैरा पेट में पडोंयाते रहे, पेट भराने हो गया और भुदा न ज्वास्ता “गन्दा द-डनी” या’नी मुंड से बढभू आने की बीमारी लग गई तो सप्त इम्तिडान हो जाअेगा, क्यूंके मुंड से बढभू आती हो तो मस्जिद का दाखिला हराम है, यहां तक के जिस वक्त मुंड से बढभू आ रही हो उस वक्त बा जमाअत नमाज पढने के लिये भी मस्जिद में आना गुनाह है. यूंके डिके आभिरत की कमी के बाईस लोगों की भारी अकसरियत में खाने की डिर्स जियादा और आज कल डर तरफ़ “डूड कल्चर” का

﴿ كَرَّمَانِ مُسْتَكْفٍ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रद पाक न पढा तहकीक  
 वोह बढ भप्त हो गया. (अन)

दौर दौरा है, इस वजह से एक ता'दाह है जिन के मुंह से बढभू आती है. मुझे बारहा का तजरिबा है के जब कोई मुंह करीब कर के बात करता है तो उस के मुंह की बढभू के सबब सांस रोकना पडता है. भा'ज अवकात एमाम व मुअज्जिन को भी गन्दा द-हनी का भरज हो जाता है, अइसा हो तो एन्हें झौरन छुट्टियां ले कर एलाज करना याहिये क्यूंके मुंह में बढभू होने की सूरत में मस्जिद के अन्दर दाभिल होना हराम है. अइसोस ! बढभूदार मुंह वाले कई अइराद मस्जिद के अन्दर मो'तकिइ भी हो जाते हैं. याद रबिये ! शर-ई हुकम येह है के अगर दौराने ऐ'तिकाइ भी मुंह में बढभू का भरज हो जाये तो ऐ'तिकाइ तोड कर मस्जिद से यला जाना होगा. भा'द में ऐक दिन के ऐ'तिकाइ की कजा कर ले. र-मजानुल मुबारक में कबाब समोसे और दीगर तली हुई चीजें और तरह तरह की मुरगन गिजाअें ठूस ठांस कर खाने के सबब मुंह की बढभू वाले मरीजों में एजाइ हो जाता है, इस का बेहतरीन एलाज येह है के सादा गिजा और वोह भी भूक से कम खाये और हाजिमा दुरुस्त रहे. नीज जब भी खा चुके भिलाव करने और भूब अखी तरह कुल्हियां वगैरा कर के मुंह साइ रहने की आदत बनाये वरना गिजा के अजजा दांतों के खला (GAPE) में रह जाते, सडते और बढभू लाते हैं. सिई मुंह ही की बढभू नहीं हर तरह की बढभू से मस्जिद को बयाना वाजिब है.

**मुंह में बढभू हो तो नमाज मकडूह होती है**

इतावा र-जविय्या जिहद 7 सइहा 384 पर है : मुंह में बढभू होने की हालत में (घर में पढी जाने वाली) नमाज भी मकडूह

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज़ पर दस भरतबा सुभद और दस भरतबा शाम दुवद पाक पढा।  
(उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी.) (रुवै) (ع)

है और ऐसी हालत में मस्जिद जाना हराम है जब तक मुंड साफ़ न कर ले. और दूसरे नमाज़ी को धजा पहोयनी हराम है और दूसरा नमाज़ी न ली हो तो ली बढभू से मलाअेका को धजा पहोयती है. उदीस में है : जिस थीज से धन्सान तकलीफ़ महसूस करते हैं क़िरिशते ली उस से तकलीफ़ महसूस करते हैं. (मुसल्लम २८२ व २८३ हदीथ ०१६)

**बढभूदार भरडम लगा कर मस्जिद में आने की मुमा-न-अत**

मेरे आका आ'ला हज़रत, धमामे अहले सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह धमाम अहमद रज़ा पान रَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शाह धमाम अहमद रज़ा पान रَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : “जिस के बदन में बढभू हो, के उस से नमाज़ियों को धजा हो म-सलन مَعَادَ اللَّهِ गन्दा दहन (या'नी जिस को मुंड से बढभू आने की बीमारी हो), गन्दा बगल (या'नी जिस के बगल से बढभू आने का भरज हो) या जिस ने पारिश वगैरा के बाधस गन्धक मली (या कोध सा बढभूदार भरडम या लोशन लगाया) हो उसे ली मस्जिद में न आने दिया ज़अे.” (इतावा र-जविथ्या मुपरज़ा, जि. 8, स. 72)

**कय्यी पियाज़ पाने से ली मुंड बढभूदार हो जाता है**

कय्यी मूली, कय्यी पियाज़, कय्या लहसुन और हर वोड थीज जिस की भू ना पसन्द हो उसे प्ा कर मस्जिद में उस वक्त तक जाना ज़ाधज नही जब तक के हाथ मुंड वगैरा में भू बाडी हो, के क़िरिशतों को धस से तकलीफ़ होती है. उदीस शरीफ़ में है, अद्लाड के महभूब, इतिहुल कुलूब, दानाअे गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “जिस ने पियाज़, लहसुन या गिन्दना (लहसुन से मिलती जुलती अेक तरकारी) प्ाध वोड हमारी मस्जिद के करीब हरगिज न आअे.” (मुसल्लम २८२ व २८३ हदीथ ०१६) और

﴿ فرماتے مستحقاً صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जडा की. (عمر الزق) ﴾

इरमाया : “अगर जाना ही याहते हो तो पका कर उस की भू दूर कर लो.”

(अबुदावूद ज ३ व ०६०६ ह ३८२७)

## मस्जिद में कय्या गोशत न ले जायें

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हजरते अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं :

मस्जिद में कय्या लहसुन और कय्यी पियाज जाना या भा कर जाना

जाईज नहीं जब तक के भू बाकी हो और येही हुक्म हर उस यीज का

है जिस में भू हो जैसे गिन्टना (येह लहसुन से मिलती जुलती तरकारी

है) मूली, कय्या गोशत और मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई जिस के

रगडने में भू उडती हो, रियाह पारिज करना वगैरा वगैरा. जिस

को गन्दा ह-हनी का आरिजा (या'नी मुंह से बढभू आने की बीमारी)

या कोई बढभूदार जम्म हो या कोई बढभूदार दवा लगाई हो तो

जब तक भू मुन्कतेअ (या'नी अत्म) न हो उस को मस्जिद में आने की

मुमा-न-अत है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 648) कय्या गोशत वगैरा

पाक यीज की अगर ईस तरह पेकिंग कर ली जाये के मा'भूली सी ली

बढभू न आये तो अब मस्जिद में ले जाने में हरज नहीं.

**कय्यी पियाज वाले कयूमर और राईते से मोहतात रडिये**

कय्यी पियाज वाले यने, छोले, राईते और कयूमर नीज

कय्ये लहसुन वाले अयार यटनी वगैरा जाने से नमाज के अवकात

में परहेज कीजिये. आ'ज अवकात कबाअ समोसे वगैरा में ली कय्यी

पियाज और कय्ये लहसुन की भू महसूस होती है लिहाजा नमाज से

पहले ईन को ली न पाईये. ऐसी भू वाली यीजें मस्जिद में लाने की

ली ईजाजत नहीं.



ફરમાને મુસ્તકી عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (કૌબાલ)

## મજમઅ મેં અગરબત્તી સુલગાના

મુસલમાનોં કે ઈજતિમાઅ મેં ખુશબૂ પહોંચાને કી નિચ્ચત સે અગરબત્તી વગૈરા જલાના કારે સવાબ હૈ. અગર લૂબાન યા અગરબત્તી કે ધૂએં સે કિસી કો તકલીફ હોતી હો તો એસે મૌકઅ પર ખુશબૂ ન જલાઈ જાએ ઈસી તરહ મજમઅ પર ઝિયાદા મિકદાર મેં “ખુશબૂદાર પાની” છિડકને સે ભી બચેં કે આમ તૌર પર ઈસ સે લોગોં કો કોફત ઔર પરેશાની હોતી હૈ.

**બદબૂદાર મુંહ લે કર મુસલમાનોં કે મજમઅ મેં જાને કી મુમા-ન-અત**

મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان ફરમાતે હૈં : મુસલમાનોં કે મજમઓં, દર્સે કુરઆન કી મજલિસોં, ઉ-લમાએ દીન વ ઔલિયાએ કામિલીન કી બારગાહોં મેં બદબૂદાર મુંહ લે કર ન જાઓ. મઝીદ ફરમાતે હૈં : જબ તક મુંહ મેં બદબૂ રહે ઘર મેં હી રહો, મુસલમાનોં કે જલ્સોં, મજમઓં મેં ન જાઓ. હુક્કા પીને વાલે, તમ્બાકૂ વાલે, પાન ખા કર કુલ્લી ન કરને વાલોં કો ઈસ સે ઈબ્રત પકડની ચાહિયે. ફુ-કહાએ કિરામ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام ફરમાતે હૈં : જિસે ગન્દા દ-હની કી બીમારી હો ઉસે મસ્જિદોં કી હાઝિરી મુઆફ હૈ. (મિરઆતુલ મનાજ્જહ, જિ. 6, સ. 25, 26)

## નમાઝ કે અવકાત મેં કચ્ચી પિયાઝ ખાના કૈસા ?

**સુવાલ :** “ગન્દા દહન” કો મસ્જિદ કી હાઝિરી મુઆફ હૈ, તો કયા કચ્ચી પિયાઝ વાલા રાઈતા યા કચૂમર યા એસે કબાબ સમોસે જિન મેં લહ્સન પિયાઝ બરાબર પકે હુએ ન હોં ઔર ઉન કી બૂ આતી હો યા મસલી હુઈ બાજરે કી રોટી જિસ મેં કચ્ચા લહ્સન શામિલ હોતા હૈ એસી ગિઝા વગૈરા જમાઅત સે કુછ દેર પહલે ઈસ નિચ્ચત સે ખા

﴿إِذْ قَالَ رَبِّي يَا كُفْرًا بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ﴾: فرماتے ہیں کہ ان لوگوں نے جو کفر سے کفر کرتے تھے، ان کو بھی کفر سے کفر کرتے تھے۔ (سورۃ البقرہ، آیت ۲۵)

સકતે હૈં કે મુંહ મેં બૂ હો જાએ ઓર જમાઅત વાજિબ ન રહે !

**જવાબ :** એસા કરના જાઈઝ નહીં. મ-સલન જહાં ઈશા કી જમાઅત અવ્વલ વક્ત મેં હોતી હૈ વહાં નમાઝે મગરિબ કે બા'દ એસા ક્યૂમર યા સલાદ વગૈરા ન ખાએ જિસ મેં કચ્ચી મૂલી યા કચ્ચી પિયાઝ યા કચ્ચા લહ્સન હો કચૂંકે ઈતની જલ્દી મુંહ સાફ કર કે મસ્જિદ મેં પહોંચના દુશ્વાર હોતા હૈ. હાં અગર જલ્દ મુંહ સાફ કરના મુશ્કિન હૈ યા કિસી ઓર વજહ સે મસ્જિદ કી હાઝિરી સે મા'ઝૂર હૈ મ-સલન ઓરત. યા નમાઝ પઢને મેં અભી કાફી દેર હૈ ઉસ વક્ત તક બૂ ખત્મ હો જાએગી તો ખાને મેં મુઝા-યકા નહીં. મેરે આકા આ'લા હઝરત ઈમામે અહલે સુન્નાત મુજદિદે દીનો મિલ્લત મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન **رَحْمَةُ الرَّحْمٰن عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ફરમાતે હૈં : કચ્ચા લહ્સન પિયાઝ ખાના, કે બિલા શુબ્હા હલાલ હૈ ઓર ઉસે ખા કર જબ તક બૂ ઝાઈલ ન હો મસ્જિદ મેં જાના મમ્નૂઅ મગર જો હુક્કા એસા કસીફ (ગાઢા) વ બે એહતિમામ હો કે **الْبَدْنِ** તગચ્ચુરે બાકી (યા'ની દેર પા બદબૂ) પૈદા કરે, કે વક્તે જમાઅત તક કુલ્લી સે ભી બ કુલ્લી (યા'ની મુકમ્મલ તૌર પર) ઝાઈલ ન હો તો કુર્બે જમાઅત મેં ઈસ કા પીના શરઅન ના જાઈઝ, કે અબ વોહ તર્કે જમાઅત વ તર્કે સજદા યા બદબૂ કે સાથ દુખૂલે મસ્જિદ કા મૂજિબ (સબબ) હોગા ઓર યેહ દોનોં મમ્નૂઅ વ ના જાઈઝ હૈં ઓર (યેહ શર-ઈ ઉસૂલ હૈ કે) હર મુબાહ ફી નર્ફિસહી (યા'ની હર વોહ કામ જો હકીકત મેં જાઈઝ હો મગર) અમ્મે મમ્નૂઅ કી તરફ મુઅદી (યા'ની મમ્નૂઅ કામ કી તરફ લે જાને વાલા) હો મમ્નૂઅ વ ના રવા હૈ. (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 25, સ. 94)

**કચ્ચી પિયાઝ ખાતે વક્ત બિસ્મિલ્લાહ મત પઢિયે**

ફતાવા ફૈઝુરસૂલ જિલ્દ 2 સફહા 506 પર હૈ : હુક્કા, બીડી,

﴿ كَرَّمَانَ مُسْتَقِيمًا ۝ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْبُ الْوَسْمِ : تُمْ جَدَا لَمِ لَو مُجَازٍ پَر دُرُودِ پَدَا كَ تُمْبَارَا دُرُودِ مُجَازٍ تَكْ پَلَوَّيْتَا هَ . (طَرَانِ) ﴾

सिगरेट पीने और (कच्चे) लहसुन, पियाज जैसी चीज खाने के वक्त और नजासत की जगहों में बिस्मिल्लाह पढना मक़रूह है।

### मुंह की बढबू मा'लूम करने का तरीका

अगर मुंह में कोई तगय्युरे राईछा (या'नी बढबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुद्लियों से उस (बढबू) का छजाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुद्लियां वगैरा करना) लाज़िम है, ईस के लिये कोई छद मुकर्रर नहीं. बढबूदर कसीफ़ (गाढा) बे अहत्तियाती का हुक्का पीने वालों को ईस का ખयाल (रખना) सप्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा सिगरेट वाले को, के ईस की बढबू मुरक़क़ब तम्बाकू से (बी) सप्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ाईद अशद ज़रूरत तम्बाकू खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूअें के बज़अे ખुद तम्बाकू डी) दबा रहता और मुंह अपनी बढबू से बसा देता है. येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुद्लियां करें के मुंह बिल्कुल साफ़ हो ज़अे और भू का अस्लन निशान न रहे और ईस का ईम्तिहान यूँ है के हाथ अपने मुंह के करीब ले ज़ा कर मुंह षोल कर जोर से तीन<sup>3</sup> बार छदक से पूरी सांस हाथ पर लें और मअन (या'नी झौरन) सूंधें. बिगैर ईस के अन्दर की बढबू खुद कम महसूस होती है और जब मुंह में बढबू हो तो मस्जिद में जाना हराम, नमाज़ में दाखिल होना मन्अ. ﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ وَرَحْمَةِ رَسُوْلِكَ ﴾ (इतावा र-अविथ्या मुखर्रज़, जि. 1, स. 623)

### मुंह की बढबू का छलाज

अगर किसी चीज के खाने के सबब मुंह में बढबू आती हो तो “हरा धनिया” खबा कर ख़ाईये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे छुअे कूलों से दांत मांजिये ﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ وَرَحْمَةِ رَسُوْلِكَ ﴾ इअेदा होगा. हां अगर पेट

﴿ فرماتے ہو کہ اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : جس نے میری طرف سے 80 بار دعا پڑھی اور اس دعا کو اپنے دل سے پڑھا تو اسے اللہ تعالیٰ نے اپنی رحمت سے نوازا اور اسے جنت میں داخل کیا۔ ﴾ (بخاری)

की पराणी की वजह से बढभू आती हो तो “कमजोरी” (या’नी जाने में कमी करने) की सआदत हासिल कर के लूक की ब-र-कतें लूटने से **اِنَّ كَلِمَاتِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** टांगों और बदन के मुप्तलिफ़ हिस्सों के दह, कब्ज, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले (या’नी दाईमी) नजले पांसी और गले के दह, मसूढ़ों में पून आना वगैरा बहुत सारे अमराज के साथ साथ मुंह की बढभू से भी जान छूट जायेगी. लूक बाकी रहे इस तरह से कम जाने में **80** ईसद अमराज से बयत हो सकती है. (तफ़सीली मा’लूमात के लिये इँजाने सुन्नत के बाब “पेट का कुड़ले मदीना” का मुता-लआ इरमाइये) अगर नफ़स की हिर्स का इलाज हो जाये तो कइ जिस्मानी और इहानी अमराज जुद ही दम तोड जायें.

रजा नफ़स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं यंदराने वाले

(हदाईके बज्शिश शरीफ़)

मुंह की बढभू का म-दनी इलाज

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ -

मुन्द-र-जये आला दुइद शरीफ़ मौकअ ब मौकअ अक ही सांस में 11 मर्तबा पढ लीजिये **اِنَّ كَلِمَاتِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मुंह की बढभू जाईल (या’नी दूर) हो जायेगी. अक ही सांस में पढने का बेहतर तरीका येह है के मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुइअ कीजिये और मुम्किना हद तक हवा इँइडों में भर लीजिये. अब दुइद शरीफ़ पढना शुइअ कीजिये. यन्द बार इस तरह मशक

करमाने मुस्तकी : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (अरबी)

करेंगे तो सांस टूटने से कबल **اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ** मुकम्मल ग्यारह बार दुरुद शरीफ़ पढने की तरकीब बन जायेगी. मजकूर तरीके पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन हद तक रोक रबने के बा'द मुंह से पारिज करना सिद्धत के लिये इन्तिहाई मुझीह है. दिन त्तर में जब जब मौकअ मिले बिल पुरूस जुली इजा में रोजाना यन्द बार तो ऐसा कर ही लेना याहिये. मुजे (या'नी सगे मदीना **عَلَيْهِ** को) अक सिन रसीदा (या'नी बूढे) हकीम साहिब ने बताया था के मैं सांस लेने के बा'द आधे घन्टे तक (या कहा) दो<sup>2</sup> घन्टे तक हवा को अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने विर्दो वजाईफ़ भी पढ सकता हूं. बकौल उन हकीम साहिब के सांस रोकने के जैसे जैसे मशशाक (या'नी मशक के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में छोते हैं के सुब्ह सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं !

**इस्तिन्जा खाने मस्जिद से कितनी दूर खोने याहियें ?**

बारगाहे र-अविथत में सुवाल हुवा के नमाजियों के लिये इस्तिन्जा खाने मस्जिद से कितनी दूर बनाने याहियें ? इस पर मेरे आका आ'ला हजरत इमामे अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ने जवाबन इर्शाद इरमाया : मस्जिद को भू से बयाना वाजिब है व लिहाजा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना हराम, मस्जिद में दिया सलाह (या'नी बदबूदार बाइद वाली मायिस की तीली) सुलगाना हराम, हत्ता के हदीस में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कय्या गोशत ले खाना जाईज नही. (ابن ماجه 16 ص 413 حديث 748) हालांके कय्ये गोशत की भू बहुत ञ्कीफ़ (या'नी हलकी) है. तो जहां से मस्जिद में भू पखोये

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : على الله تعالى عليه والله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (५)

વહાં તક (ઈસ્તિન્જા ખાને બનાને કી) મુમા-ન-અત કી જાએગી. (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 16, સ. 232) કચ્ચે ગોશત કી બદબૂ હલકી હોતી હૈ જબ યેહ ભી મસ્જિદ મેં લે જાના જાઈઝ નહીં તો કચ્ચી મછલી લે જાના બદ-ર-જએ ઔલા ના જાઈઝ હોગા કચ્ચુંકે ઈસ કી બૂ ગોશત સે ઝિયાદા તેઝ હોતી હૈ બટ્કે બા'ઝ અવકાત પકાને વાલોં કી બે એહતિયાતી કે સબબ ઈસ કા સાલન ખાને સે હાથ ઔર મુંહ મેં ના ગવાર બૂ હો જાતી હૈ. એસી સૂરત મેં બૂ દૂર કિયે બિગૈર મસ્જિદ મેં ન જાએ. ઈસ્તિન્જા ખાનોં કી જબ સફાઈ કી જાતી હૈ ઉસ વક્ત બદબૂ કાફી ફૈલતી હૈ લિહાઝા (ઈસ્તિન્જા ખાને ઔર મસ્જિદ કે દરમિયાન) ઈતના ફાસિલા રખના ઝરૂરી હૈ કે સફાઈ કે મૌકઅ પર ભી બદબૂ મસ્જિદ મેં દાખિલ ન હો સકે. ઈસ્તિન્જા ખાને ઈહાતએ મસ્જિદ મેં ખુલતે હોં તો ઝરૂરતન દીવાર પાટ કર બાહર કી જાનિબ દરવાઝે નિકાલ કર ભી બદબૂ સે મસ્જિદ કો બચાયા જા સકતા હૈ.

**અપને લિબાસ વગૈરા પર ગૌર કરને કી આદત બનાઈયે**

મસ્જિદ મેં બદબૂ લે જાના હરામ હૈ. નીઝ હર તરહ કે બદબૂ વાલે શપ્સ કા દાખિલ હોના ભી હરામ હૈ. મસ્જિદ મેં કિસી તિન્કે સે ખિલાલ ભી ન કરેં કે જો પાબન્દી સે હર ખાને કે બા'દ ઈસ કે આદી નહીં હોતે ખિલાલ કરને સે ઉન કે દાંતોં સે બદબૂ નિકલતી હૈ. મો'તકિફિ ફિનાએ મસ્જિદ મેં ભી ઈતની દૂર દાંતોં કા ખિલાલ કરે કે બદબૂ અસ્લે મસ્જિદ મેં દાખિલ ન હો. બદબૂદાર ઝખ્મ વાલા યા વોહ મરીઝ જિસ ને પેશાબ યા પાખાને કી થેલી (Urine bag Stool bag) લગાઈ હુઈ હૈ વોહ મસ્જિદ મેં દાખિલ ન હોં. ઈસી તરહ લેબોરેટરી ટેસ્ટ કરવાને કે લિયે લી હુઈ ખૂન યા પેશાબ કી

﴿فَرَمَانِے مُسْتَكْمِلًا﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरेद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमाल)

शीशी, जभीहा के ब वक्ते जभू निकले हुअे धून से आलूद कपडे वगैरा किसी चीज में धुपा कर भी मस्जिद के अन्दर नहीं ले जा सकते युनान्हे हु-कहाअे किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ इरमाते हैं : मस्जिद में नजासत ले कर जाना अगर्ये उस से मस्जिद आलूदा न हो या जिस के बदन पर नजासत लगी हो उस को मस्जिद में जाना मन्अ है. (दُرُ الْمُنْتَهَى २६ ص ०१७) मस्जिद में किसी बरतन के अन्दर पेशाब करना या इस्द का धून लेना (म-सलन टेस्ट के लिये सिरिन्ज के जरीअे धून निकालना) भी ज़ाईज नहीं. (दُرُ الْمُنْتَهَى २६ ص ०१७) पाक बढबू धुपी हुई हो जैसा के अकसर लोगों के बदन में पसीने की बढबू छोती है मगर लिबास के नीचे धुपी हुई छोती है और मडसूस नहीं छोती तो इस सूरत में मस्जिद के अन्दर जाने में कोई हरज नहीं. इसी तरह अगर रुमाल में पसीने वगैरा की बढबू है जैसा के गरमी में मुंड का पसीना पोंछने से अकसर हो जाती है तो अैसा रुमाल मस्जिद के अन्दर न निकाले, जेब ह्डी में रहने दे, अगर ठमामा या टोपी उतारने से पसीने या मैल कुयैल वगैरा की बढबू आती है तो मस्जिद में न उतारे. युनान्हे इस की मिसाल देते हुअे मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार पान رَحْمَةُ الْخَنَّانِ इरमाते हैं : “हां अगर किसी सूरत से मिट्टी के तेल की बढबू उडा दी जाअे या इस तरह लेम्प वगैरा में बन्द किया जाअे के इस की बढबू जाहिर न हो तो (मस्जिद में) ज़ाईज है.” (इतावा नईमिया, स. 49) हर मुसल्मान को अपने मुंड, बदन, रुमाल, लिबास और जूती यप्पल वगैरा पर गौर करते रहना याहिये के इस में कहीं से बढबू तो नहीं आ रही और अैसा मैला कुयैला लिबास पहन कर भी मस्जिद में न आअें जिस से लोगों को घिन आअे. अइसोस ! दुन्यवी अइसरों





﴿ ईरमाने मुस्तफ़ि : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुरेद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरेद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मक्किरत है. (भाग १) ﴾

## गोशत, मछली बेयने वाले

गोशत या मछली बेयने वाले के लिबास में सप्त बढबू होती है लिहाजा एन को याहिये के इरिग हो कर अख़ी तरह नहाअें, साइ लिबास जैबे तन इरमाअें, पुशबू लगाअें और इर मस्जिद में आअें. नहाना और पुशबू लगाना शर्त नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अर्ज़ किया है, कोई त्मी अैसी तरकीब करें के बढबू मुकम्मल तौर पर जाईल (या'नी दूर) हो जाअे.

## सोने से मुंड में बढबू हो जाती है

सोते में पेट की गन्दी हवाअें ठीपर की तरफ़ उठती हैं, लिहाजा बेदार होने पर मुंड में अक्सर बढबू होती है. एस जिन्न में इतावा र-जविय्या जिह्द 23 सइहा 375 ता 376 से "सुवाल जवाब" मुला-हजा हों. सुवाल : सोने से उठ कर आ-यतुल कुर्सी पढना कैसा है? आ'ज उस्ताद हुक्का पीते हैं और शागिर्द को (कुरआने करीम) पढाते जाते हैं. जवाब : सोने से उठ कर हाथ धो कर कुल्ली कर ले एस के आ'द आ-यतुल कुर्सी पढे, अगर मुंड में हुक्के वगैरा की बढबू हो या कोई पाने पीने की चीज़ हो तो बिगैर कुल्ली किये तिलावत न करे. जो उस्ताद अैसा करते हैं बुरा करते हैं. وَاللّٰهُ تَعَالَىٰ اَعْلَمُ (इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 375, 376) हमारे मुअत्तर मुअत्तर आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वुजूदे मस्जिद हर वक्त महकता रहता था, मिजाजे मुबारक में निहायत नइासत थी, मिस्वाक सोते वक्त सिरहाने रहती, उठते तो सभ से पहले मिस्वाक करते. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सोने में सिरहाने मिस्वाक रबना और उठ कर मिस्वाक करना सुन्नत हुवा. रसूलुदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नींद से बेदार होते तो मिस्वाक करते थे.

(अबुदावुदज १/ ५६० हदिथ ०७)

﴿ ईरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર એક દુરૂદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ عَلِيمٌ اُولَئِكَ لِيُثَبِّتَهُمْ فِي دِينِهِمْ وَهُوَ الَّذِي يُثَبِّتُ لِمَن يَشَاءُ اَلْوَقْعَ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴾  
 अज विभता है और कीरात उडुद पछाड जितना है. (मिर्ज़ा)

## बा'ज गिजाओं की वजह से पसीने में बढबू

बा'ज गिजाओं ऐसी छोती हैं जिन के जाने से बढबूदार पसीना आता है जैसे अइराद गिजाओं तब्दील इरमाओं.

### मुंह की सफ़ाई का तरीका

जो मिस्वाक और जाने के बा'द भिलाव नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त छोते हैं अक्सर उन के मुंह बढबूदार छोते हैं. सिर्फ़ रस्मी तौर पर मिस्वाक और भिलाव का तिन्का दांतों से मस (TOUCH) कर देना काफ़ी नहीं छोता. मसूढे जम्मी न हों इस अहत्तियात के साथ मुम्किना सूरत में गिजा का एक एक ऊर्दा दांतों से निकालना छोगा वरना दांतों के दरमियानी गिजाई अजजा पडे पडे सडते और सप्त सडांद (या'नी बढबू) का बाईस बनते रहेंगे. दांतों की सफ़ाई का एक तरीका येह भी है के कोई चीज जाने और याय वगैरा पीने के बा'द और इस के छलावा भी जब जब मौकअ मिले म-सलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और जुम्बिशें देते रहें या'नी छिलाते रहें, इस तरह मुंह का क्यरा और मैल कुयैल साफ़ छोता रहेगा. सादा पानी भी यल जाअेगा और अगर नमक वाला काबिले बरदाश्त गर्म पानी छो तो येह  $\text{كُلُّ شَيْءٍ مِّنْ دَرَسٍ يَكْفُرُ بِهِ}$  बेहतरीन "माउथ वॉश" साबित छोगा.

### दाढी को बढबू से बयाईये

दाढी में अक्सर गिजाई अजजा अटक जाते हैं, सोने में बा'ज अवकात मुंह की बढबूदार राल भी दाभिल छो जाती है और इस तरह बढबू आती है लिहाजा वक्तन इ वक्तन साबुन से दाढी धो लेना मुनासिब है. इसी तरह सर के बाल भी वक्तन इ वक्तन

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने क़िताब में मुज़ पर दुरुद पाक लिखा तो ज़ब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ. १)

धोते रहिये. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस के बाल हों उन का इकराम करे.” (अबुदौद ज ६ व १०३ हदीथ ६१३) या’नी इन्हें धोअे, तेल लगाअे और कंधी करे. (अशैएँ اللّمعات ج ३ व ११४)

### पुरुषूदार तेल बनाने का आसान तरीका

सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो आ’ज़ अवकात बढबू का त्पका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पडे वोह उम्हा पुरुषूदार तेल डाले पुरुषूदार तेल बनाने का अेक आसान तरीका येह भी है के ओपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के यन्द कतरे डाल कर डल कर लीजिये. पुरुषूदार तेल तय्यार है. (पुरुषूदार तेल बनाने के मप्सूस अेसेन्स भी पुरुषूयात की दुकानों से हासिल किये जा सकते हैं) सर के बालों को वक्तन इ वक्तन साबुन से धोते रहिये.

### डो सके तो रोज़ नडाईये

जिस से बन पडे वोह रोज़ाना नडाअे, के काई हद तक बदन की बाहरी बढबू जाईल होगी और येह सिद्धत के लिये भी मुफ़ीद है. (मगर मो’तकिईन मस्जिद के गुस्ल जानों में बिला सप्त ज़रत के न नडाअें, के नमाज़ियों के लिये वुज़ू के पानी की तंगी डो सकती है और मोटर भी बार बार चलने की वजह से खराब डो सकती है नीज़ तब नडाअें ज़ब गुस्ल जाने इनाअे मस्जिद में हों अगर पारिजे मस्जिद में हों तो गुस्ले जुमुआ की भी इजाज़त नहीं सिर्फ़ इर्ज़ गुस्ल की इजाज़त है)

### इमामा वगैरा को बढबू से बयाने का तरीका

आ’ज़ इस्लामी भाई काई बडे साईज का इमामा शरीफ़ बांधने का ज़जबा तो रभते हैं मगर सफ़ाई रभने में कोताही कर जाते

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुरद पाक पढा अदलाह उस पर दस  
रहमतें भेजता है. (स्)

हैं और यूँ जसा अवकात ला शुजिरी में मस्जिद के अन्दर “बदबू”  
कैलाने के जुर्म में इंस जाते हैं. लिहाजा म-दनी इस्तिजा है के इमामा,  
सरबन्द शरीफ़ और यादर इस्ति’माल करने वाले इस्लामी भाई  
मौसिम के अ’तिबार से या ज़रतन मजीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने  
की तरकीब बनाते रहें, वरना मैल कुयैल, पसीना और तेल वगैरा  
के सबब इन चीजों में बदबू हो जाती है, अगर्चे फुद को महसूस  
नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन आती है, फुद  
को इस लिये पता नहीं चलता के जिस के पास जियादा देर तक कोई  
मफ्सूस पुश्बू या बदबू हो इस से उस की नाक अट जाती है.

### इमामा कैसा होना चाहिये

सप्त टोपी पर बंधे बंधाये इमामे का इस्ति’माल भी इस के  
अन्दर बदबू पैदा कर सकता है. अगर हो सके तो बारीक मलमल के  
हलके कुलके कपडे का इमामा शरीफ़ इस्ति’माल कीजिये और इस के  
लिये कपडे की ऐसी टोपी पहनिये जो सर से चिपडी हुई हो के ऐसी  
टोपी पहनना भी सुन्नत है. बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर  
रख लेने और उतार कर रख देने के बजाये बांधते वक्त अक अक  
पेय कर के बांधिये और इसी तरह फोलने की तरकीब कीजिये. और  
बार बार हवा लगने की वजह से **بَدْبُوءٌ** भी दूर होगी.  
इमामा व सरबन्द शरीफ़, यादर और लिबास वगैरा को उतार कर  
धूप में डालने से भी पसीने वगैरा की बदबू दूर हो सकती है. नीज  
इन पर अख़री अख़री निथ्यतों के साथ उम्दा इत्र लगाते रहना भी  
बदबू को दूर कर सकता है. जिम्नन इत्र लगाने की निथ्यतें और  
मवाकेअ भी मुला-हजा इरमा लीजिये :

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શખ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરાન)

## ખુશબૂ લગાને કી નિયતેં ઓર મવાકેઅ

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “મુસલમાન કી નિયત

ઉસ કે અમલ સે બેહતર હે.” (1) (السُّنَنُ الْكُبْرَى ج ٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢) સુન્નતે મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હૈ ઈસ લિયે ખુશબૂ લગાઉંગા (2) લગાને સે કબલ બિસ્મિલ્લાહ (3) ખુશબૂ આને પર લગાતે હુએ દુરૂદ શરીફ ઓર (4) લગાને કે બા'દ અદાએ શુક્રે ને'મત કી નિયત સે કહૂંગા (5) મલાએકા ઓર (6) મુસલમાનોં કો ફરહત (ખુશી) પહોંચાઉંગા (7) અકલ બઢેગી તો અહકામે શર-ઈ યાદ કરને ઓર સુન્નતેં સીખને પર કુવ્વત હાસિલ કરૂંગા (ઈમામ શાફેઈ ઈબ્રાહીમી રહીમેં ફરમાતે હૈં : ઉમ્દા ખુશબૂ લગાને સે અકલ બઢતી હૈ. (1/244) (8) લિબાસ વગૈરા સે બદબૂ દૂર કર કે મુસલમાનોં કો ગીબત કે ગુનાહોં સે બચાઉંગા (કયૂંકે કિસી મુસલમાન કા લિબાસ વગૈરા બદબૂદાર હો તો બિલા ઈજાઝતે શર-ઈ ઉસ કે પીછે સે મ-સલન ઈસ તરહ કહના કે “ઈસ કે લિબાસ યા હાથોં યા મુંહ સે બદબૂ આ રહી થી” ગીબત હૈ) (9) મૌકઅ કી મુના-સબત સે યેહ નિયતેં ભી કી જા સકતી હૈં મ-સલન (10) નમાઝ કે લિયે ઝીનત હાસિલ કરૂંગા (11) મસ્જિદ (12) નમાઝે તહજજુદ (13) જુમુઆ (14) પીર શરીફ (15) ર-મઝાનુલ મુબારક (16) ઈદુલ ફિત્ર (17) ઈદુલ અઝહા (18) શબે મીલાદ (19) ઈદે મીલાદુન્નબી صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (20) જુલૂસે મીલાદ (21) શબે મે'રાજુન્નબી صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (22) શબે બરાઅત (23) ગ્યારહવીં શરીફ (24) યૌમે રઝા (25) દર્સે કુરઆન વ (26) હદીસ (27) તિલાવત (28) અવરાદો વઝાઈફ (29) દુરૂદ શરીફ (30) દીની કિતાબ કા

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبَلِ﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अःन)

मुता-लआ (31) तदरीसे ँल्मे दीन (32) ता'लीमे ँल्मे दीन (33) इतवा नवीसी (34) दीनी कुतुब की तस्नीफ व तालीफ (35) सुन्नतों भरे ँजतिमाअ (36) ँजतिमाअे जिको ना'त (37) कुरआन प्वानी (38) दर्सै ईजाने सुन्नत (39) अलाकाई दौरा बराअे नेकी की दा'वत (40) सुन्नतों भरा बयान करते वक्त (41) आलिम (42) मां (43) बाप (44) मोमिने सालेह (45) पीर सालिब (46) मूअे मुबारक की जियारत और (47) मजार शरीफ की हाजिरी के मवाकैअ पर भी ता'जीम की नियत से पुश्बू लगाई जा सकती है. जितनी अखी अखी नियतें करेंगे उतना ही जियादा सवाब मिलेगा. जब के नियत का मौकअ भी हो और वोह नियत शरअन दुरुस्त भी हो. जियादा याद न भी रहें तो कम अज कम दो<sup>2</sup> तीन<sup>3</sup> नियतें कर ही लेनी याहिएं.

अै हमारै प्यारे प्यारे अद्लाह अَعَزَّ وَجَلَّ आज तक हम से जितनी बार भी मस्जिद में बढबू ले जाने का गुनाह हुआ हो उस से तौबा करते हैं और येह अज़्म करते हैं के आयन्दा कभी भी मस्जिद में किसी तरह की बढबू नहीं ले जायेंगे. या रब्बे मुस्तफ़! अَعَزَّ وَجَلَّ! हमें मसाजिद को पुश्बूदार रबने की सआदत दे. या अद्लाह अَعَزَّ وَجَلَّ! हमें हर तरह की जाहिरी बातिनी बढबूओं से पाक हो कर मस्जिद में हाजिरी की सआदत अता इरमा. या अद्लाह अَعَزَّ وَजَلَّ! हमारे पुश्बूदार सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके हमें गुनहों की बढबूओं से नजात दे और पुश्बूओं से मलकती हुई जन्नतुल फिरदौस में अपने मुअत्तर मुअत्तर हबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडोस नसीब इरमा.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुउदे पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रइमते भेजता है. (स्ल.)

वल्लाह जो मल जाअे मेरे गुल का पसीना

मांगे न कल्मी एत्र न फिर याह् दृल्हन झूल

(हदाएके बफ़िशश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

अपने दांत गौर से आधने में ट्रेप लीजिये

जैर ज्वाही के जजबे के तहत सवाब कमाने की छिर्स में अर्ज है के अगर आप के दांत मैले कुयैले या पीले हें तो भुशदिली के साथ सगे मदीना गफ़ी की तरफ़ से यन्द म-दनी झूल कबूल इरमा लीजिये, इन्शाअे अल्लाह एउुजल्ले अहुत इअेदा डोगा.

● मैले कुयैले दांत दूसरों के लिये कराहत और घिन का बाधस डोते हें

● मुलाक़ाती वगैरा पर मैले दांत वाले की शफ़िसय्यत का असर अख़्ठा नही पडता ● अ कसरत पान गुटके वगैरा जाने वाले गोया पैसे ट्रे कर

अपने दांतों का लुसुन तबाह करते, मुंह का धाला और केन्सर खरीदते हें ● मिस्वाक सुन्नत के मुताबिक अख़्ठी तरह रगड रगड कर कीजिये

● जाने के बा'द दांतों में फ़िलाल करने का मा'मूल बना लीजिये ● जब

भी कुछ जाअें या याय वगैरा पियें, कुल्ली लर कर यन्द मिनट तक मुंह में पानी डिलाते रहें इस तरह मुंह का अन्दरूनी छिस्सा और दांत

किसी हद तक धुल जाअेंगे ● सोते वक्त उल्क और दांत अख़्ठी तरह साइ डोने याछिअें, वरना गले में तकलीफ़ और दांतों पर मैल की तह

मजबूती से जमेगी, अन्द मुंह के अन्दर गिजाई अज्जा सडने से मुंह में बढबू डोगी और जरासीम पेट में जाने से तरह तरह की बीमारियां

जन्म ले सकती हें ● सोने में पेट की गन्दी हवाअें डीपर को उठती हें लिहाजा मुंह बढबूदार डो जाता है, उठ कर झौरन डाय धो कर मिस्वाक

कर के कुल्लियां कर लीजिये, इन्शाअे अल्लाह एउुजल्ले मुंह की बढबू जाती रहेगी.

﴿ کَرَّمَانَ مُسْتَفِیًا ۖ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ۝﴾ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (طریق)

## બેહતરીન મન્જન

મુનાસિબ મિકદાર મેં ખાને કા સોડા ઓર ઉતના હી નમક મિલા કર બોતલ મેં ડાલ લીજિયે, બેહતરીન મન્જન તય્યાર હે.

અગર મુવાફિક હો તો રોઝાના ઈસ સે દાંત માંઝિયે, **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** હાથોં હાથ દાંતોં કા મૈલ ઉતરતા દેખેંગે. બિલફર્જ મસૂદે યા મુંહ મેં કિસી જગહ જલન વગૈરા મહસૂસ ફરમાએં તો મિકદાર કમ કર કે દેખ લીજિયે, અબ ભી તક્લીફ હો તો સફાઈ કી કોઈ ઓર તદબીર કીજિયે, દાંત બહર હાલ સાફ હોને યાહિએં.

**મ-દની ફૂલ :** હર તરહ કી સફાઈ સુન્નત ઓર મતલૂબે શરીઅત હે.

બદબૂ ન દહન મેં હો, દાંતોં કી સફાઈ હો

મહકાઈ દુરૂદોં કી મુંહ મેં તેરે ભાઈ હો

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

**નોટ :** યેહ રિસાલા પહલી બાર 12 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ 1427 સિ.હિ.

(બ મુતાબિક 6-09-2006) કો તરતીબ પાયા ઓર કઈ બાર શાએઅ કિયા ગયા ફિર 5 રબીઉલ ગૌસ 1433 સિ.હિ. (28-2-2012) મેં ઈસ પર નઝરે સાની કી.

### યેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તક્રીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઓર જુલુસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદા' રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેમ્ફલેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્યતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'બૂલ બનાઈયે, અખબાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેમ્ફલેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

તાલિબે ગમે મદીના વ બકીઅ વ મગ્કિરત વ બે હિસાબ જન્નતુલ ફિરદૌસ મેં આકા કા પડોસ



5 રબીઉલ ગૌસ 1433 સિ.હિ.  
28-2-2012



## ફેહરિસ

| ઉન્વાન   | ક્રમ | ઉન્વાન                                     | ક્રમ |
|--|------|--|------|
| દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત                              | 1    | મુંહ કી બદબૂ કા મ-દની ઈલાજ                 | 10   |
| મસ્જિદ મેં બલગમ દેખ કર સરકાર કી ના ગવારી         | 1    | ઈસ્તિન્જા ખાને મસ્જિદ સે કિતની દૂર હોને    |      |
| ફારૂકે આ'જમ ઓર મસ્જિદ મેં પુશ્બૂ                 | 2    | ચાહિએં ?                                   | 11   |
| મસ્જિદે પુશ્બૂદાર રખિયે !                        | 2    | અપને લિબાસ વગેરા પર ગૌર કરને કી આદત બનાઈયે | 12   |
| એયર ફેશનર સે કેન્સર હો સકતા હૈ                   | 2    | મસ્જિદ મેં બચ્ચે કો લાને કી મુમા-ન-અત      | 14   |
| મુંહ મેં બદબૂ હો તો મસ્જિદ મેં જાના હરામ હૈ      | 3    | ગોશત, મછલી બેચને વાલે                      | 15   |
| મુંહ મેં બદબૂ હો તો નમાઝ મકરૂહ હોતી હૈ           | 4    | સોને સે મુંહ મેં બદબૂ હો જાતી હૈ           | 15   |
| બદબૂદાર મરહમ લગા કર મસ્જિદ મેં આને               |      | બા'જ ગિઝાઓં કી વજહ સે પસીને મેં બદબૂ       | 16   |
| કી મુમા-ન-અત                                     | 5    | મુંહ કી સફાઈ કા તરીકા                      | 16   |
| કચ્ચી પિયાઝ ખાને સે ભી મુંહ બદબૂદાર હો જાતા હૈ   | 5    | દાઢી કો બદબૂ સે બચાઈયે                     | 16   |
| મસ્જિદ મેં કચ્ચા ગોશત ન લે જાએં                  | 6    | પુશ્બૂદાર તેલ બનાને કા આસાન તરીકા          | 17   |
| કચ્ચી પિયાઝ વાલે ફ્યૂમર ઓર રાઈતે સે મોહતાત રહિયે | 6    | હો સકે તો રોઝ નહાઈયે                       | 17   |
| મજમઅ મેં અગરબત્તી સુલગાના                        | 7    | ઈમામા વગેરા કો બદબૂ સે બચાને કા તરીકા      | 17   |
| બદબૂદાર મુંહ લે કર મુસલમાનોં કે મજમઅ             |      | ઈમામા કેસા હોના ચાહિયે                     | 18   |
| મેં જાને કી મુમા-ન-અત                            | 7    | પુશ્બૂ લગાને કી નિયતે ઓર મવાકેઅ            | 19   |
| નમાઝ કે અવકાત મેં કચ્ચી પિયાઝ ખાના કેસા ?        | 7    | અપને દાંત ગૌર સે આઈને મેં દેખ લીજિયે       | 21   |
| કચ્ચી પિયાઝ ખાતે વકત બિસ્મિલ્લાહ મત પઢિયે        | 8    | બેહતરીન મન્જન                              | 22   |
| મુંહ કી બદબૂ મા'લૂમ કરને કા તરીકા                | 9    | મઆખિજો મરાજેઅ                              | 23   |
| મુંહ કી બદબૂ કા ઈલાજ                             | 9    | ફેહરિસ                                     | 23   |

## માخذ ومراجع

| مطبوعه   | کتاب              | مطبوعه                        | کتاب             |
|--|-------------------|-------------------------------|------------------|
| فیضان القرآن، مجلس ترویج و نشر، مرکز الاولیاء، لاہور | مراۃ المسالیح     | دار ابن خزیمہ بیروت           | صحیح مسلم        |
| دار المعرفۃ بیروت                                    | در مختار          | دار احیاء التراث العربی بیروت | ابوداؤد          |
| دار المعرفۃ بیروت                                    | رد المحتار        | دار الکتب العلمیۃ بیروت       | سنن نسائی        |
| رضا فاؤنڈیشن، مرکز الاولیاء، لاہور                   | فتاویٰ رضویہ      | دار المعرفۃ بیروت             | ایتن ماجہ        |
| شعبان برادر، مرکز الاولیاء، لاہور                    | فتاویٰ فیض الرسول | دار الکتب العلمیۃ بیروت       | مسند ابی یعلیٰ   |
| کتب اسلامیہ، سمرات                                   | فتاویٰ نعیمیہ     | دار احیاء التراث العربی بیروت | معجم کبیر        |
| مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ، کراچی                    | بہار شریعت        | دار الکتب العلمیۃ بیروت       | الترغیب والترہیب |
| ☆☆☆  | ☆☆☆               | کونسل                         | احیۃ المفہات     |

